अनलर्निंग

पुनराविष्कार का मार्ग

अंतर्वस्तु

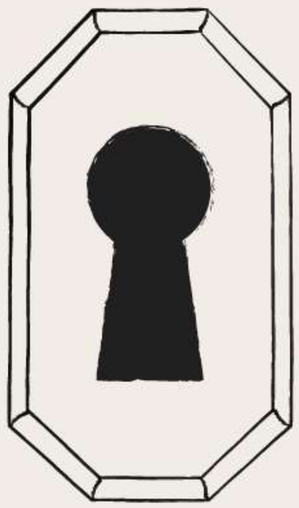

नंद किशोर चौधरी द्वारा नोट 01

अनलर्निंग की शक्ति 03

व्यापार में अनलर्निंग 05

अनलर्निंग में तकनीक 07

अनलर्निंग और यात्रा में कदम 11

अभ्यास और व्यक्तिगत उपाख्यान 16

अनलर्निंग भविष्य है 18

“अनलर्निंग किसी के दिमाग को मौजूदा दुनिया में रखते हुए भूलते नहीं, बल्कि और विकसित करते हुए एक नई दुनिया को बनाने के लिए तैयार करने जैसा है।”

अनलर्निंग मेरे पसंदीदा शब्दों में से एक है। मैं इसे पुनराविष्कार और आत्मनिरीक्षण के लिए एक चिकित्सा के रूप में पाता हूं।

जीवन सीखने, सीखते रहने और पुनः सीखने की एक सतत यात्रा है। इंसान अपने जीवन में कभी भी सीखना बंद नहीं करता है वह निरंतर सीखता है।

इस ई-बुक के माध्यम से, मैं अपने कुछ विचारों और जीवन के सीख: जिन्होंने मेरी यात्रा में मेरी मदद की उसे साझा कर रहा हूं ।

मुझे आशा है कि यह ई-बुक आपको, स्वयं को सशक्त बनाने में उपयोगी और सार्थक लगेगी।

नंद किशोर चौधरी

अनलर्निंग की शक्ति

शिक्षा से मेरा रिश्ता स्नातक के साथ समाप्त हो गया लेकिन मेरे जीवन की असल शिक्षा की वहीं से शुरुआत हुई जो अभी भी जारी है और आगे भी ऐसे ही फलती-फूलती रहेगी। जिसे मैं अक्सर कहता हूं कि कॉलेज के बाद मैंने एक नए विश्वविद्यालय, यूनिवर्सिटी ऑफ हार्ड रॉक्स ऑफ लाइफ में प्रवेश लिया।

हर बार अपूर्णता की भावना मुझे और जानने और सीखने के लिए प्रेरित करती है।

हम खुद को हाइड्रेट रखने के लिए पानी पीते हैं, खुदको जिंदा रखने के लिए ऑक्सीजन अंदर लेते हैं। इसी तरह अनलर्निंग वह ब्रेन फीड है जिसका उपयोग हम अपनी सचेत रहने और आत्म-जागरूकता पर काम करने के लिए करते हैं।

व्यापार में हम प्रतिस्पर्धा, बाजार और सफलता की अराजकता में खुद को खो देते हैं। अनलर्निंग हमारे वापस आने का रास्ता खोजने की कुंजी है।

व्यापार में अनलर्निंग

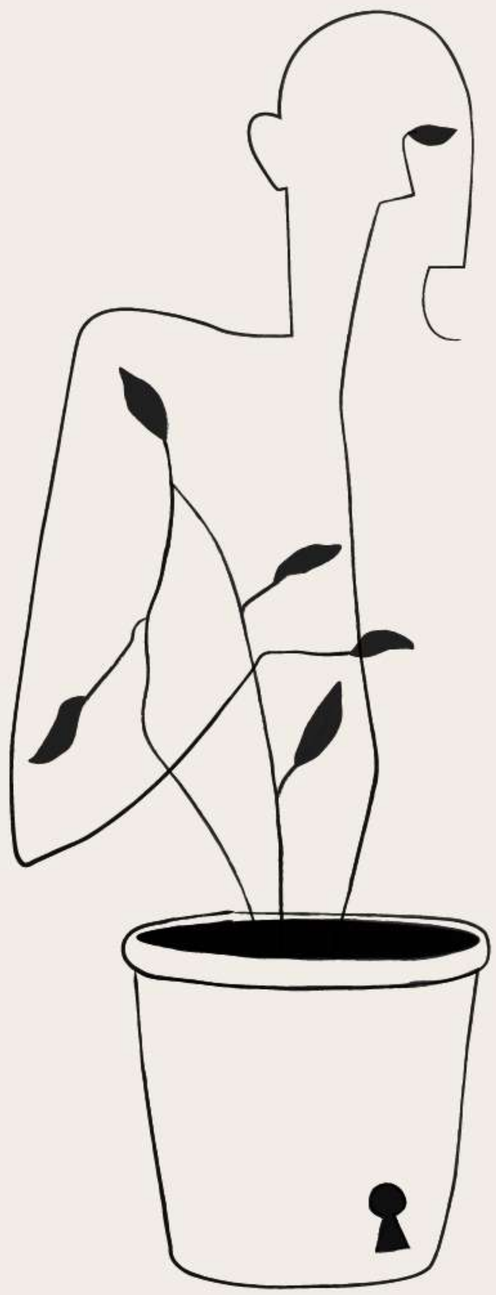

अक्सर व्यवसाय में आप कॉलेज और उच्च शिक्षा से जो कुछ भी जानते हैं अथवा सीख कर आते हैं , उसमें फंस जाते हैं। लेकिन हमारी सीख अधूरी है जो इसे अप्रभावी बनाती है।

जब मैंने व्यवसाय में अपना पहला कदम रखा तो मुझमें अनलर्निंग के बीज पनपे। जिन कारीगरों ने मेरे सपने को साकार करने में मेरी मदद की, उन्हें समाज ने अछूत बताकर खारिज कर दिया। उनके साथ रहकर और उन लोगो के साथ काम करना शुरू करके मैंने पहला कदम उठाया।

अनलर्निंग की सुंदरता इसकी पूर्णता में निहित है। अनलर्निंग में और अधिक गोता लगाने के लिए, इसपर ध्यान केंद्रित करने के लिए मैंने कुछ कदम उठाये जो नीचे लिखे निम्न बाते हैं।

अनलर्निंग की तकनीक

हर किसी की तरह छोटी उम्र से ही मैंने भी अपने आस-पास बहुत सी चीजों को आत्मसात किया। इसने मुझमें चीजों की एक धारणा बनाने में योगदान दिया। यह कभी-कभी सत्य के साथ संरेखण में था लेकिन अधिक्तर पक्षपातपूर्ण था। इसलिए इससे लड़ने और इसे समझने के लिए मैंने अनलर्निंग की तरफ खुलने का फैसला किया।

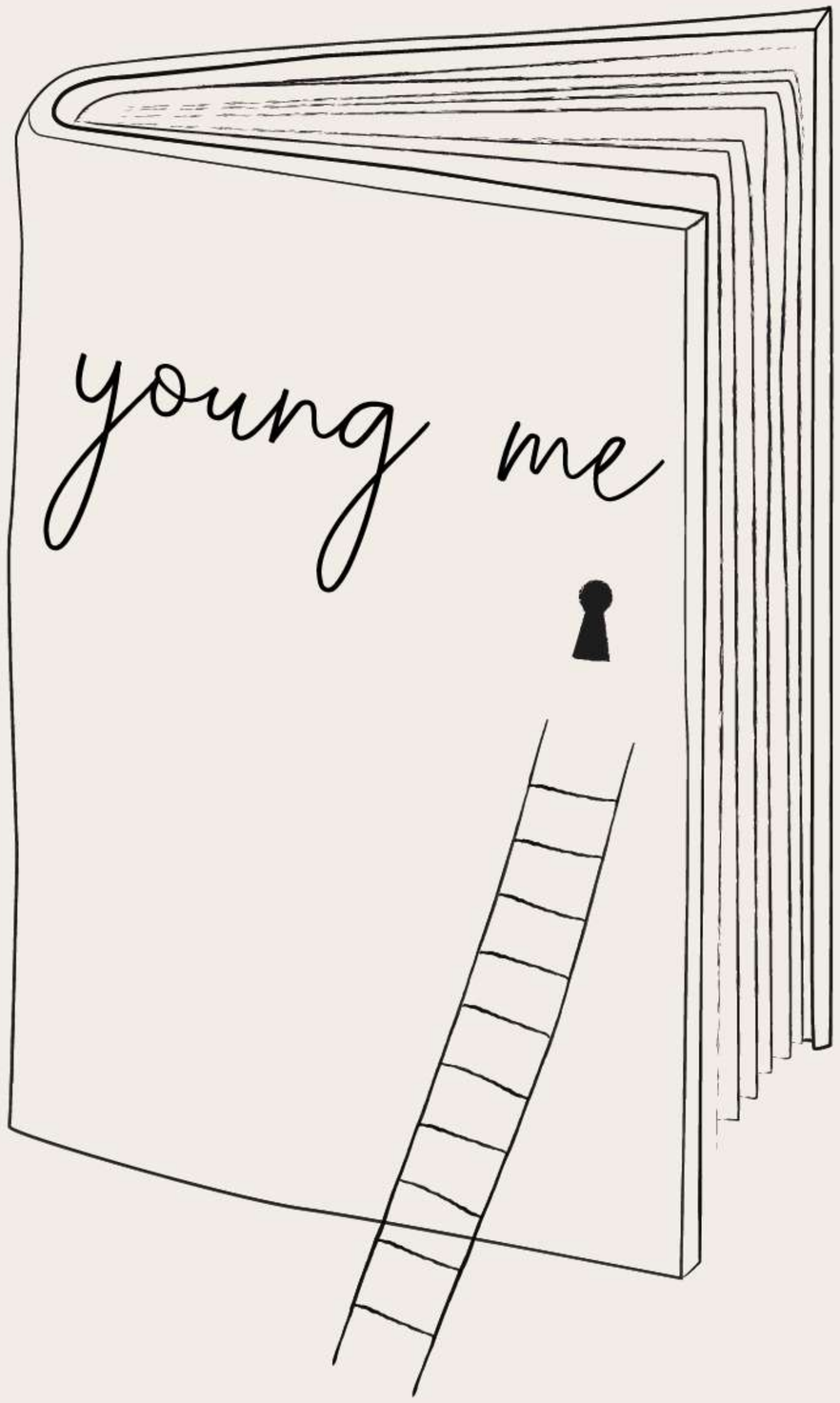

जाने देना

एक अनलर्न की मदद करने में मानसिकता एक प्रमुख भूमिका निभाती है। मानसिकता व्यक्ति की धारणाएं, मूल्य, उद्देश्य, विश्वास और अनुभव हैं। एक बार जब हम अपने दिमाग को नई चीजों को स्वीकार करने, व्याख्या करने और संलग्न करने के लिए खोलते हैं, तो हमें अनलर्निंग के सार का स्वाद मिलता है। अनलर्निंग का पहला हिस्सा है कि नए सिरे से नए चीजों को ग्रहण करने के लिए खुद-मे जगह बनाएं।

किसी भी पूर्व पूर्वाग्रहों और आदतों को दूर करना

अनलर्निंग में किसी व्यक्तिगत भूमिका से आगे बढ़कर संपूर्ण दृश्य को देखने के लिए खुदको प्रतिबिंबित करने की क्षमता होने की आवश्यकता होती है । इसमें किसी भी पुरानी धारणाओं, अनुभव, आदर्शों, मूल्यों, उद्देश्यों और विश्वासों को रीसेट करना और चुनौती देना शामिल है जो निर्णय लेने और सीखने में सचेत या अवचेतन रूप से उपयोगी होता है।

पुरानी मानसिकता को संशोधित करना

अनलर्निंग हमारे आराम क्षेत्र से बाहर निकलकर और विश्वासों की पुन: जांच करके नए लक्ष्यों और प्रतिक्रियाओं की पुन: खोज के बारे में है।

सीखना और सीखते रहना समुद्र के दो विपरीत तटों की तरह हैं। वे ज्ञान पर ज्ञान को चैनलाइज़ करने के माध्यम से ही मिलते हैं। पुल अदृश्य लग सकता है, लेकिन अगर हम प्रक्रिया पर भरोसा करते हैं, तो इसे पार करना आसान है।

अनलर्निंग के विभिन्य कदम

वहीं से शुरू करें जहां आप रुके थे

जब मैंने पहली बार अनलर्निंग पर ठोकर खाई तो मैं इसके लाभों को लेकर निश्चित नहीं था। खैर, मुझे यह भी नहीं पता था कि अनलर्निंग कैसे शुरू करें। शुरुआती दिन भ्रमित और धुंधले थे। 1990 के दशक के अंत में जब मैं अपना मुख्य कार्यालय स्थापित करने के लिए जयपुर आया और अपने व्यवसाय को वैश्विक स्तर पर ले जाने का फैसला किया तो मुझे नहीं पता था कि कहां से शुरू करूं। बाद में हर दूसरे विकल्प पर विचार करने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि जहां रुका था वहीं से शुरू करूंगा। मैं ग्रामीण नेतृत्व के प्रति प्रवृत्त था जिसने कंपनी के विकास को प्रतिबंधित कर दिया। इससे मुझे एहसास हुआ कि यह अनलर्न करने का समय है।

मैंने किताबें पढ़ना, भाषण सुनना और एक वैश्विक व्यवसाय चलाने के बारे में सीखना शुरू किया, जिसने मेरे दिमाग को नई संभावनाओं और दृष्टिकोणों के लिए खोल दिया।

सदैव सीखने के लिए तैयार रहें

जैसे-जैसे हम निकट जाते हैं युद्ध करीब आता प्रतीत होता है। मन और हृदय निरंतर युद्ध में हैं। पहले सीखना एक ऐसी चीज है जिसे हमें इस प्रक्रिया में भूल जाना चाहिए लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम इसका अवमूल्यन कर रहे हैं। मुझे खुद को ढूंढना था लेकिन यह तभी संभव है जब मैं अपने पुराने स्व को खो दूं और नया सिरा अपनाता चला जाऊं।

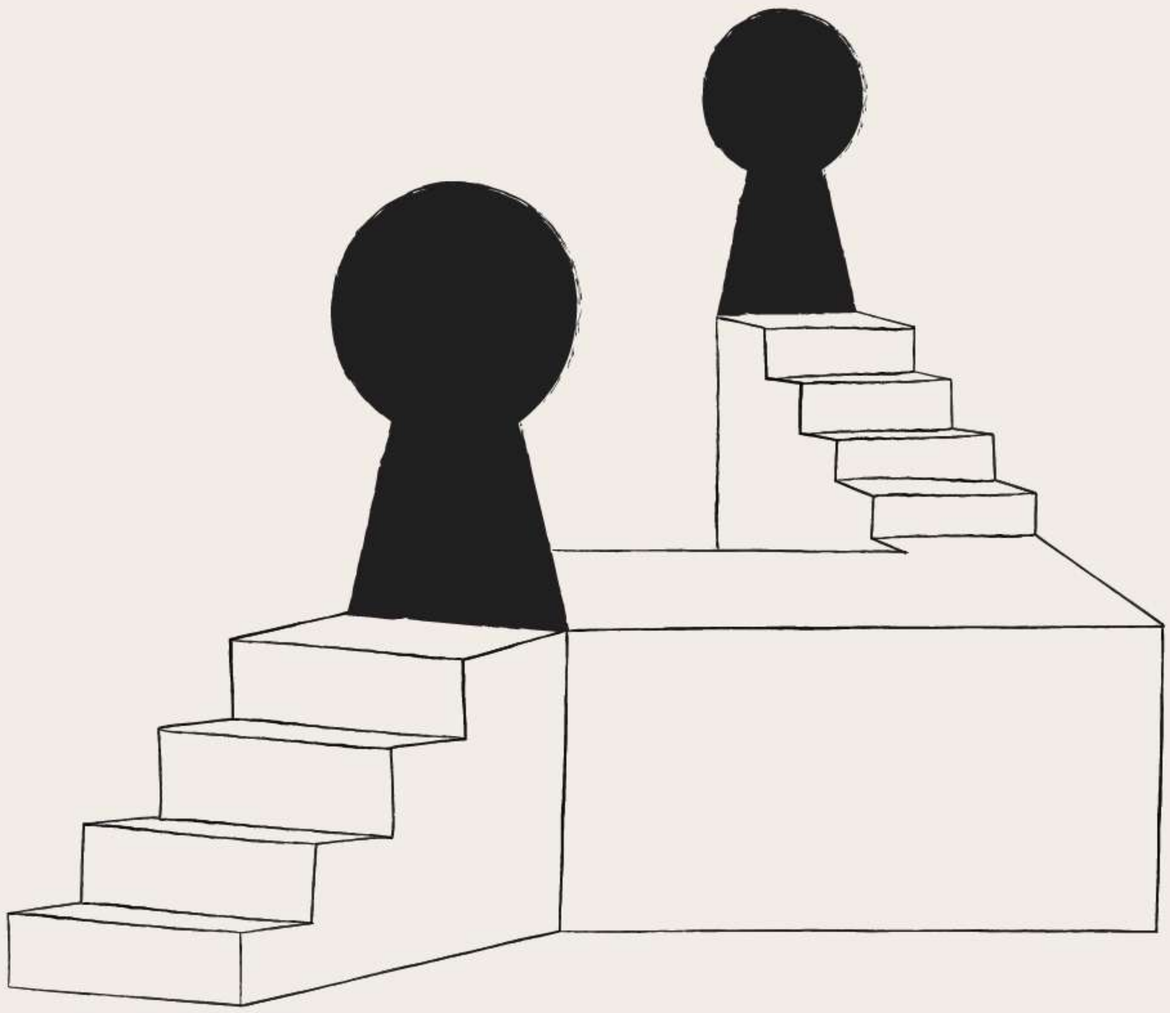

अपनी मान्यताओं पर सवाल उठाएं

अपने विश्वासों की जांच करें और उनसे सवाल करें। वे व्यवहार के संकेतक हैं। नई मान्यताएं अंततः नए व्यवहार में योगदान देंगी।

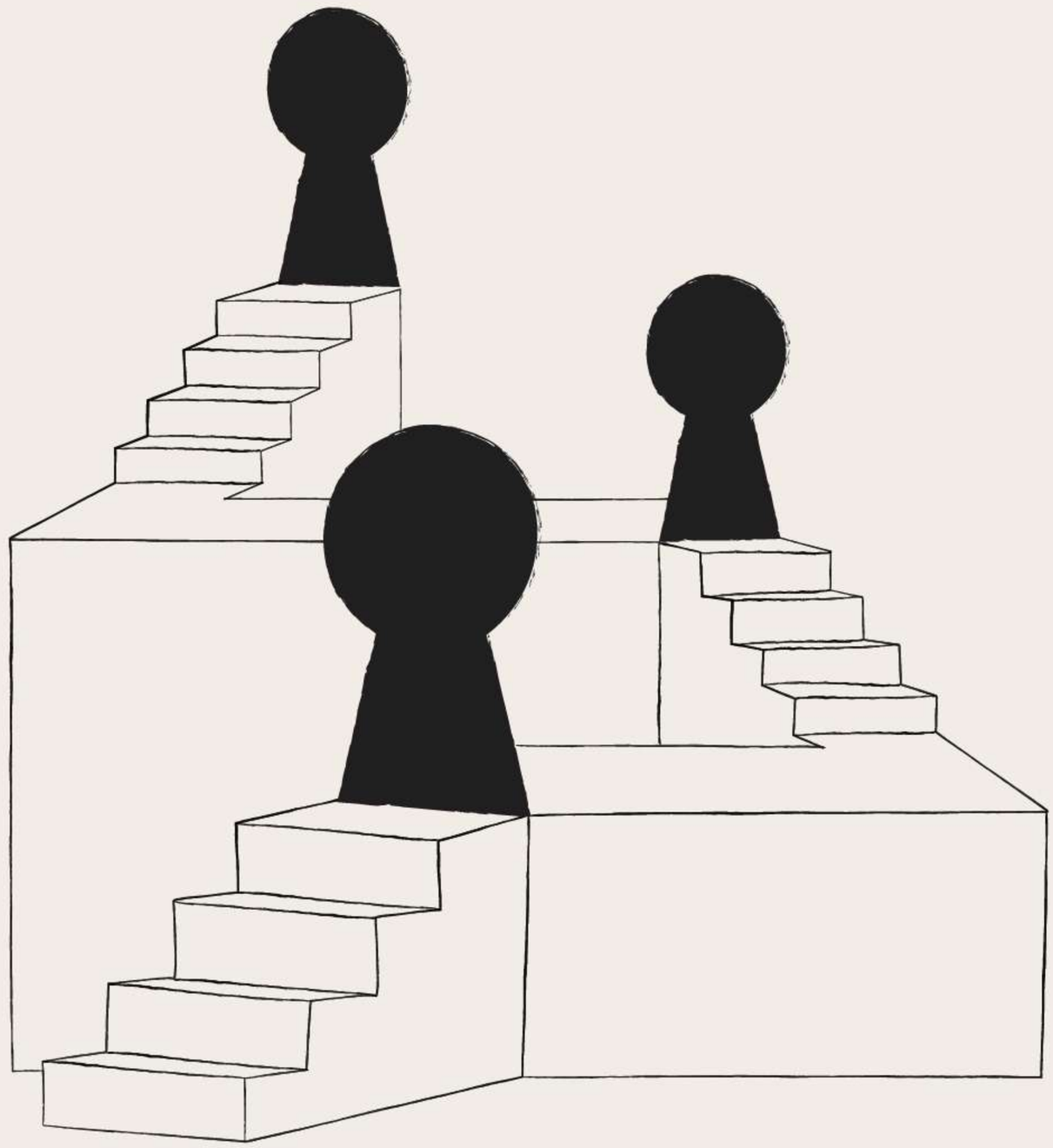

स्वं काआईना साफ करें और आगे की ओर बढ़ें!

यह वैश्विक विस्तार के दौरान की बात है, जब मैंने खुद को देखना शुरू कर दिया। मैंने अपनी आंतरिक यात्रा की एक टाइमलाइन बनाई। यह आसान नहीं था, मैं अक्सर बेचैन और हैरान महसूस करता था। ऐसे भी दिन थे जब मैंने हार मानने के बारे में भी सोचा था लेकिन फिर मैं आईने के सामने खड़ा हो गया, उसे साफ किया और उसमे अपने प्रतिबिंब को देखा। तभी मुझे एहसास हुआ कि जब मैं इतनी दूर आ गया हूं तो मैं हार नहीं मान सकता। भीतर की यात्रा संकरी और फिसलन भरी होने वाली है, जो मौजूदा हालातों और मान्यताओं से भरी हुई है। लेकिन जब हम इस पर चलते हैं, तो यह हमें सच्ची प्रगति के मार्ग पर ले जाता है।

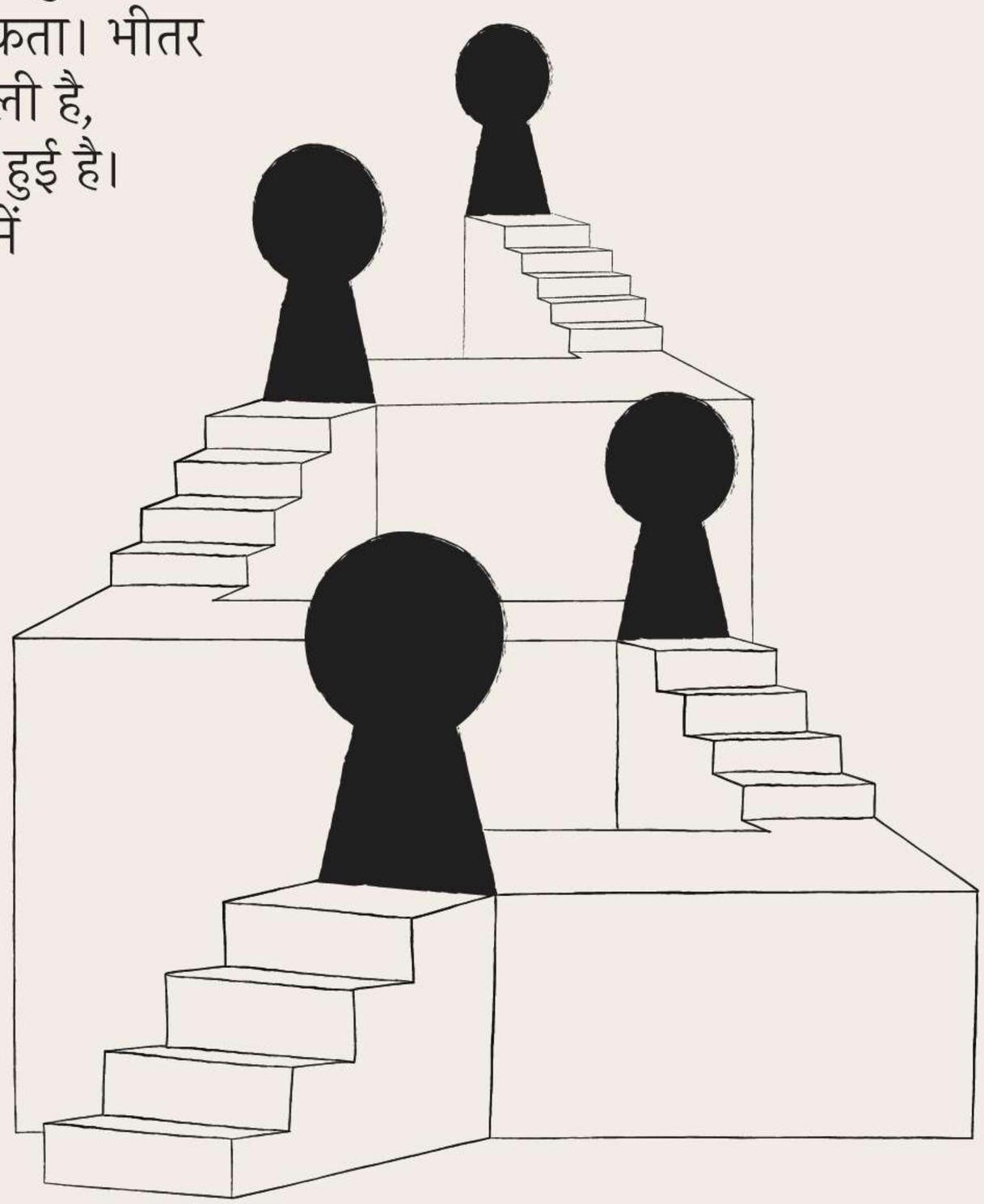

मेरी अशिक्षित यात्रा ने एक बड़ा मोड़ ले लिया जब मेरे दोस्त, इले कूपर ने मुझे बताया की मुझे एक लड़की होना एक आशीर्वाद के समान है। एक बार मेरी पत्नी सुलोचना ने मुझसे कहा था कि तीन बच्चियां होने के कारण लोग उन्हें नीचा दिखा रहे हैं।

इस बात ने मुझे दुविधा में डाल दिया था क्योंकि मुझे कभी समझ नहीं आया कि लड़की होने में क्या समस्या है। मैं सलाह के लिए अपने दोस्त इले के पास गया और उन्होंने मुझे महसूस कराया कि हमारा समाज लड़कियों को नीचा मानता है, और लड़कों का पक्ष लेता है जिसके परिणामस्वरूप लड़कियों को उचित मौका नहीं मिलता है।

इसलिए मैंने अपनी सभी बेटियों और बेटों को सम्मान का हिस्सा देने और उन सभी के साथ समान व्यवहार करने का फैसला किया। हमने अपनी बेटियों और बेटों दोनों को ही विदेश में पढ़ने के लिए भेजा। हमारे आस-पास के सभी लोगों को समझाना आसान नहीं था, लेकिन अब जब मैं सोचता हूं, तो यह पाता हूँ की मेरी बेटियों ने जयपुर रग्स को एक ब्रांड बना दिया है, और मुझे उन पर गर्व है।

यात्रा और अभ्यास

सीखना, सीखते रहना और फिर से सीखना एक सतत प्रक्रिया है। जो एक बच्चे की मासूमियत के समान है और जो व्यवसाय के लिए जैविक तरीके से फलने-फूलने के लिए महत्वपूर्ण है।

जब मेरे पांच बच्चे व्यवसाय में शामिल हुए, तो यह जंगल की आग की तरह बढ़ने लगा। व्यवसाय के तेजी से विकास का समर्थन करने के लिए मुझे अनुभवी और शिक्षित पेशेवरों को नियुक्त करना पड़ा। लेकिन उन्होंने मुझे उल्टी दिशा में पंहुचा दिया। मैंने सीखा कि ज्ञान शक्ति है लेकिन अभ्यास के बिना प्राप्त बहुत अधिक ज्ञान अहंकार विकसित करता है। अभ्यासी कभी-कभी ज्ञान के बिना कौशल प्राप्त कर लेते हैं। पेशेवरों के अहंकार को तोड़ने के लिए, मैंने एक सीखने की पहल शुरू की जिसे हमने 'हायर स्कूल ऑफ अनलर्निंग' नाम दिया।

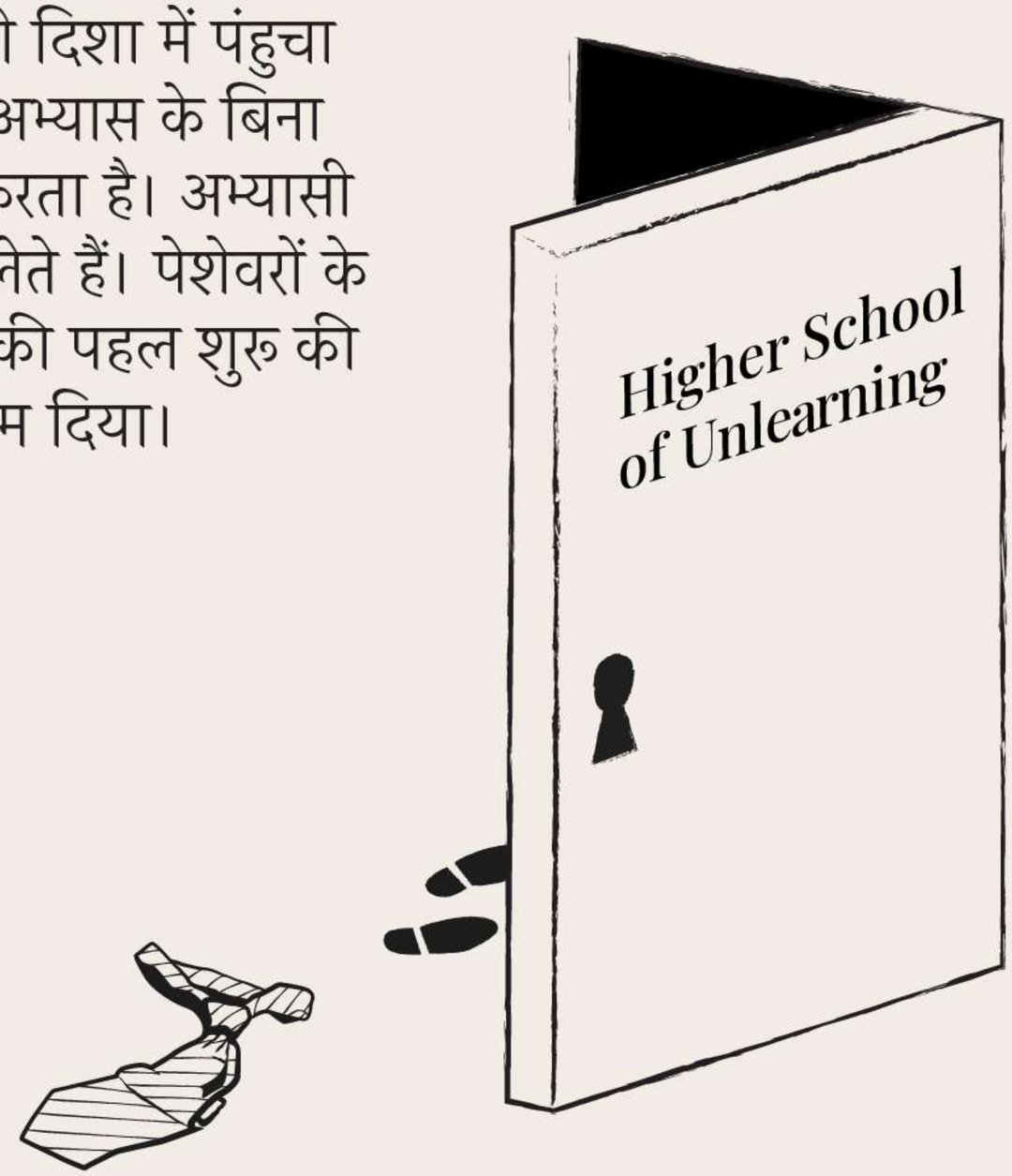

हमने व्यावसायिक प्रक्रिया की गहरी समझ विकसित करने के लिए विभिन्न विभागों में अपने पुराने अशिक्षित प्रबंधकों के साथ पेशेवर लोगो को काम पर रखा । मैंने उन्हें व्यवसाय और हमारे जैसे लोगों के प्रबंधन के लिए बुनियादी बातों को सिखाने की चुनौती भी ली, जो उन्होंने अपने स्कूल और कॉलेज में कभी नहीं सीखी थी। इससे साझा ज्ञान की संस्कृति विकसित करने में मदद मिली और व्यवसाय को बड़े पैमाने पर लाभ हुआ।

सीखना न तो एक प्राकृतिक कौशल है और न ही इसे हासिल करना आसान है। यह दूसरों के जूतों में जाने के जैसा है जो असहज बनाता है लेकिन अगर आकार फिट नहीं होता है तो हमें पूरी तरह से जूता न पहनने के बजाय एक नया खरीदना पड़ता है। इसी तरह अनलर्निंग एक बार में पुरानी मान्यताओं का खंडन नहीं करता है बल्कि यह धारणा और समझ को संशोधित करता है।

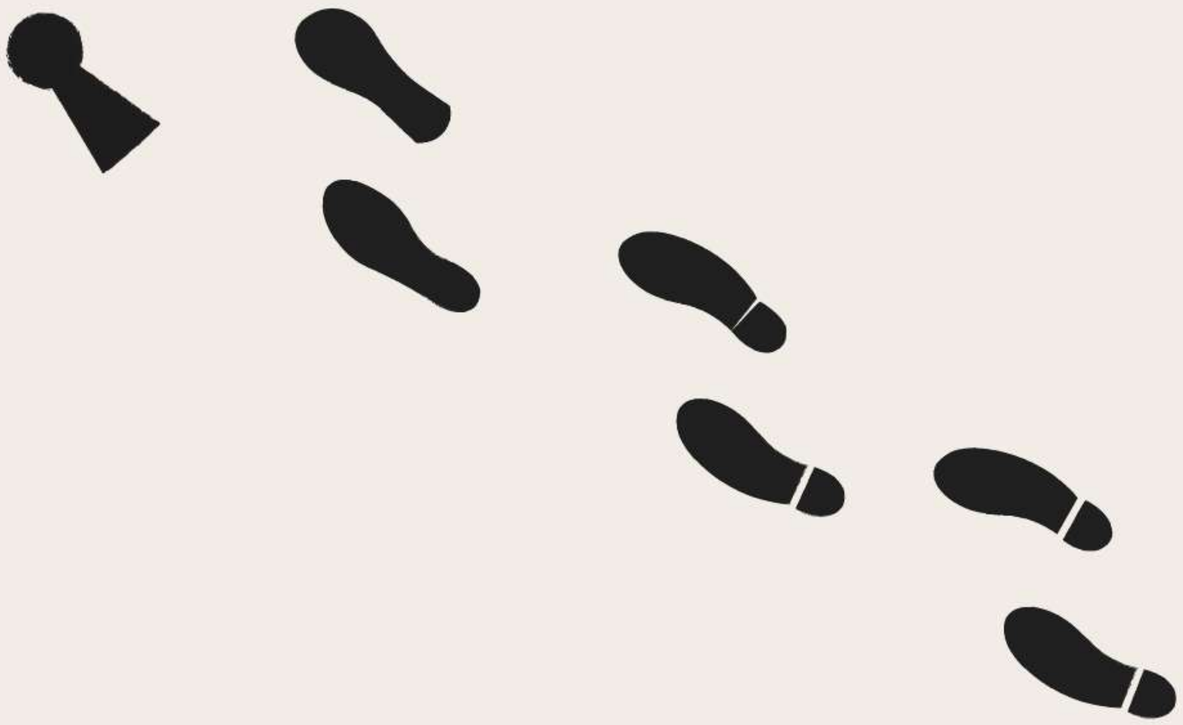

अनलर्निंग भविष्य है

यह सब कहने के साथ, एक प्रश्न आता है कि हम अनलर्निंग क्यों कर रहे हैं?

क्या हम अनलर्निंग कर रहे हैं कोई प्रतियोगिता या दौड़ जितने के लिए? क्या हम सफलता प्राप्त करना सीख रहे हैं? यदि हां, तो क्या अनलर्निंग सफलता का एक ऐसा फॉर्मूला है जिसकी कई लोग तलाश कर रहे हैं?

अगर मुझे कहना पड़े तो मैं कहूंगा कि अनलर्निंग स्वयं से अहंकार को दूर करने की एक टीकाकरण प्रक्रिया है। अनलर्निंग का अंतिम लक्ष्य जागरूकता के बढ़े हुए स्तर के लिए आत्मनिरीक्षण के गहरे स्तरों में स्वयं को धकेलना है। इसलिए अनलर्निंग के माध्यम से हम उस जहाज की तरह असहज होते हुए भी बढ़ते रहते हैं जो बंदरगाह में बिना तूफान के ही डूब जाता है।

मैं महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर का निरंतक पाठक हूं। मुझे गांधी की पुस्तक 'हिंद स्वराज' का एक अंश याद है, जिसमें पश्चिमी शिक्षा में खामियों के बारे में बताया गया था और अपने धर्म को पूरा करने के लिए उन्हें इसे कैसे छोड़ना पड़ा। गांधी औपचारिक शिक्षा में नहीं बल्कि स्व-अध्ययन में अत्यधिक विश्वास करते थे। वह अशिक्षा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है और हमें इस बात का एहसास कराता हैं कि हमें पहले उस चीज़ को छोड़ना होगा जिसे हमने समझा था कि यह एक नई समझ के लिए रास्ता बनाने जैसा है।

तो याद रखें, बीती ताहि बिसार दें और सीखना जारी रखें।

धन्यवाद